

॥ गीताध्यानम ॥

ॐ पार्थाय प्रतिबोधिताम भगवता नारायणेन स्वयम व्यासेन ग्रथिताम  
पुराणमुनिना मध्ये महाभारतम ।  
द्वैताश्रुतवर्षिणीम भगवतीम अष्टादशाध्यायिनीम अश्व त्रामनुसन्दधामि  
भगवदगीते भवद्वेषिणीम ॥ १

नमो-स्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दायत पत्रनेत्र ।  
येन त्रया भारततैल पूर्णः प्रज्वालितो घ्यानमयः प्रदीपः ॥ २

प्रपन्न पारिजाताय तोत्रवेत्रै कपाणये ।  
घ्यानमुद्राय क्रुषाय गीता-श्रुदुहे नमः ॥ ३

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।  
पार्थो वंसः सुधीर्भोज्ञा दुक्लम गीताश्रुतम महत ॥ ४

वसुदेवसुतम देवम कम्सचाणूर मर्दनम ।  
देवकी परमानन्दम क्रुषम वन्दे जगद्गुरुम ॥ ५

डीश्वद्रोणतटा जयद्रथजला गान्कारनीलोपला शल्यग्रोहवती क्रुपेण वहनी  
कर्णेन बेलोकुला ।  
अश्वथाम विकर्ण घोरमकरा दुर्योधनावर्तिनी सोतीर्णा खलु पाण्डवै रणनदी  
कैवर्तकः केशवः ॥ ६

पाराशर्य वचस्सरोजममलम गीतार्थगङ्गाकटम नानाध्यानककेसरम हरिकथा

সম্বোধনাবোধিতম ।

লোকে সজ্জন ষট্‌পদৈরহরহঃ পেপীয়মানম মুদা ভূয়াদ ভারতপন্‌গ্‌ক্‌জম  
কলিমলপ্রধর্মিস নঃ শ্রেয়সে ॥ ৭

মুকম করোতি বাচালম পন্থুম লন্থয়তে গিরিম ।

য়ৎক্রুপা তমহম বন্দে পরমানন্দ মাধবম ॥ ৮

য়ম ব্রহ্মা বরুনেন্দ্র রুদ্র মরুতঃ স্তম্বন্তি দিব্যৈঃ স্তবৈঃ ।

বেদৈঃ সান্থপদক্রমোপনিষদৈঃ গায়ন্তি যম সামগাঃ ॥

ধ্যানাবস্থিত তদগতেন মনসা পশ্যন্তি যম যোগিনো যস্যান্তম ন বিদুঃ

সুরাসুরগণাঃ দেবায় তস্মৈ নমঃ ॥ ৯